...सुखदेव को भगत सिंह से कितना लगाव था इसका अनुमान नीचे दिए गए उसके अपने ही शब्दों से लगाया जा सकता है। भगत सिंह की गिरफ्तारी के बाद अपनी मन:स्थिति का वर्णन करते हुए उसने लिखा था[1]:

> "इस रोज के वाकया (इशारा हादसा असेम्बली बम केस की ओर था) ने मेरी रुहानी जिन्दगी में इंकलाब पैदा कर दिया। आलम मुझे सुनसान नजर आने लगा। बहरूनी (बाहरी) दुनिया के मजे मुझसे दूर भाग गए और मैं कहने लगा कि अब मेरा कोई नहीं रहा, जो मेरा था वह चला गया, जो रह गया वह काम है। उसमें इगानियत (लगाव) और आकवत (अलगाव) नहीं है। मैं बातें करता था लेकिन दिल किसी और ख्याल में मेहब था। मैं हँसता था लेकिन इस हँसी में मुसर्रत (खुशी) जरा भी नहीं थी, मैं काम में लगा रहता था एक इन्सान की शक्ल में नहीं बल्कि एक मशीन के मानिन्द। ऐसा महसूस होता है कि मेरा जो कुछ था वह मुझसे छिन चुका है। अब मेरे पास कुछ नहीं रहा। मुझे इल्म था कि मेरी ख्वाहिश से ही वह गया। मैंने खुद उसे चले जाने को कहा था। मेरी अक्ल बार-बार मुझे यह समझाने की कोशिश करती थी, लेकिन जब मैंने अपनी इन आँखों से उसे जाते हुए देखा था जब वह मुझसे जुदा हो रहा था। वह मेरा नहीं था। हम दोनों वतन के थे, दुनिया के थे, इसलिए मैंने उसे चले जाने के लिए कहा था और वह चला गया। मुझे अब मालूम हुआ कि वह मेरा था, मैं उसका हूँ। मैं उससे तर्क नहीं कर सकता, अपने से दूर नहीं कर सकता, लेकिन वह तो चला गया। बहुत फासला पर इतने फासले पर जहाँ मेरी रसाई नहीं हो सकती न अब वो ही वापस आ सकता है। इस फिकर ने मुझे दिलवदसिता (निराश) कर दिया और मेरा दिल उसकी तलाश में मेहब (विचारों में डूब जाना) हो गया। उठते-बैठते, चलते-फिरते हर वक्त उसकी याद और उसका ध्यान रहता। हर चीज़ में, हर इंसान में, हर जगह आँखों के सामने वह नज़र आने लगा। कई बार ऐसा महसूस हुआ कि वह मुझे बुला रहा है और मैं चौंक उठता लेकिन उसकी शक्ल नजर न आती। जिधर निगाह उठती उसका खूबसूरत चेहरा, मस्त आँखें, फानूस (जगमगाते हुए) ख्याल की मानिन्द घूमती दिखाई देतीं। मेरी मोहब्बत – मैंने सोचा कि यह बेवकूफी है, लेकिन नहीं, एक नशा था, एक दीवानगी थी, मोहब्बत थी, जिसे मैंने उस वक्त समझा जब मैं पुलिस की हवालात में गिरफ्तार था। मेरी गिरफ्तारी के कुछ रोज बाद एक डी.एस.पी. मेरे पास पहुँचा। थोड़ी देर बातें करने के बाद उसने मुझे बताया कि वह दिल्ली से आया है। दिल्ली से! ये अल्फाज सुनते ही मेरे दिल के तार बजने लगे। दिल्ली से! उसके पास से! मैंने दरियाफ्त किया, कब आए, उससे मिले थे, उसके क्या हाल हैं? खुश है? तन्दरुस्त है? इतना कहते-कहते मेरा दिल भर आया। मेरे ख्वाबदीदा जज्बात

---

[1] यह उद्धरण 10 अप्रैल, 1931 के 'वन्देमातरम' में प्रकाशित सुखदेव के एक लेख से लिया गया है। लेख का शीर्षक था 'सरदार भगत सिंह – अपने शहीद साथी सुखदेव की नजरों में'। इस लेख का प्रकाशित करते हुए 'वन्देमातरम्' के संपादक ने लिखा था कि असेम्बली में बम फेंकने के बाद और भगत सिंह और दत्त की गिरफ्तारी करने के बाद लाहौर पुलिस ने कश्मीर बिल्डिंग पर छापा मारा। सुखदेव और उनके रूपकार को गिरफ्तार कर लिया। चन्द हफ्तों बाद तमाम हसाद जेल भेज दिए गए। सुखदेव ने इन दिनों जेल में अपने रफीक भगतसिंह के मुतालिक जबर्दस्त आर्टिकल लिखा था जो मसलहते वक्त के खातिर हमने इस वक्त तक रोक रखा था। आज हम उसे नाज़रीन के मुतालिया के लिए पेश करते हैं।

ने बेदार होकर जोकि चन्द घड़ी पहले खामोश था, महेशरस्तान (शून्य) बना दिया। मैं फूट-फूट कर रोने लगा। वह खुश है, बहुत अच्छा है। इन्हीं अल्फाज की रट मैं दिल में लगाने लगा। अपनी हालत का ख्याल छोड़, लोहे के दरवाजे पर सिर रखकर हिचकियाँ लेकर रोने लगा। उसकी मस्त आँखें मुझसे मोहब्बत भरी निगाहों से ताकने लगीं। मेरा रोना बन्द हो गया। मैं भी दीवानावार उसकी तरफ टिकटिकी लगाकर देखने लगा। उसके बाद उस डी.एस. पी. ने मुझे दुबारा इस बारे में कुछ नहीं कहा और न ही मैंने कुछ पूछा। इस ख्याल से कि अवाम में उसकी चर्चा हो जाए, मुझे शर्म महसूस होने लगी। लेकिन शर्म अब कसूरवार की शर्म नहीं थी। बुजदिल की शर्म नहीं थी। मेरी फितरती कमजोरी के एक नावाकिफ शख्स पर जाहिर हो जाने पर वह शर्म थी। वह नावाकिफ शख्स जो मुझे अपने जिस्म के मानिन्द मालूम होता था। उसी पुलिस वाले के सामने मैं रो दिया। किसी का जिक्र करके वह क्या सोचता होगा। आदमी होकर, इंकलाब पसन्द होकर पुलिस वालों की मौजूदगी में मेरे लिए यह गैरमुनासिब था। इस वक्त मुझे अपने जज्बात पर काबू हासिल करना चाहिए था। मैंने बहुत बुरा किया। इसके बाद मैंने पुलिस वालों से ज्यादा बातचीत करना तर्क कर दिया। मैं हर वक्त लेटा रहता था और उसकी याद में महब रहता था। उसका ख्याल रह-रहकर दिल में चुभता। उसकी मस्त आँखें हर वक्त मेरी निगाहों के सामने रक्स करती रहतीं। कई बार मैं घुटनों में मुँह दबाकर बेसाख्ता रोने लगता। रोते हुए सोचता कि मुझे क्या हो गया, मैं तो इस तरह कभी रो नहीं दिया था।"

(हवाला:- शिव वर्मा: *संस्मृतियाँ – क्रान्तिकारी शहीदों के संस्मरणात्मक रेखाचित्र* (2006), पृष्ठ 114-116, प्रकाशक: राहुल फाउण्डेशन, 69, बाबा का पुरवा, पेपरमिल रोड, निशातगंज, लखनऊ-226006)